
Priorities and Thrust Areas for Research

- The CSU will identify the priorities and thrust areas of research in consultation with the respective various institutional committees, and other concerned councils. The priorities and thrust areas of research need to be conducted systematically along with the details of facilities, availability of funding/scholarship/incentives/fellowships and infrastructure available for undertaking research in these areas.
- The CSU will prioritise the research regarding **Research Projects, Publications, Intellectual Property Rights (IPR), and Manuscripts Repository**.
- The following are the priorities and thrust areas, as well these are subjects to review from time to time:

1. Manuscripts Editing and Preparation of Critical Editions

- Critical editing under editing principles and rules.
- Critical Review of published and unpublished manuscripts.
- Preparation of critical edition of a single available manuscript.
- Special editions with translation in Sanskrit, Hindi, English and other language.
- The Sharing, collecting, purchasing, digitizing, and acknowledging the manuscripts resulting as **IPRs and patents** - all these pursuits will be performed in Ganganath Jha Campus, Prayagraj.

2. Indian Knowledge Traditions and their Application

- Research on contemporary problems, challenges, and issues in the context of most enriched traditions of Indian Knowledge Traditions.
- Some Research related to Indian Knowledge Traditions are expected as Scientific and fundamental research engaging in different areas leading to new theories.
- Research focussing on correlative studies with these concerns and domains of Indian Knowledge Traditions.
- Research dealing with ancient history, archaeology, museology, Vedic agriculture, traditions of medicines, healthcare, and so on are the top priorities of CSU.
- **Any theme related with other Shastric discipline** - Interdisciplinary and multidisciplinary research on allied branches of Sanskrit Knowledge System.
- **Critical discourse analysis of Sanskrit Language** - Analysis of Sanskrit Language with other Indian and foreign languages which is based on growing interdisciplinary research movement
- **Information and Communication Technology based Themes and Areas** - Computational Linguistics and Traditional Studies, Natural Language Processing, Technological Experiments based Research, i.e., development of technological resources for teaching of Sanskrit, Development of Tools, and Software for learning and optimum utilisation of Sanskrit Knowledge System.

3. Review of Criticism of Indian Knowledge Traditions

- Review of Indian Shastric Literature.
- Evaluation of theory formulations and propagations performed by colonial approaches.
- Criticism of prior publications and propagations by modern commentators and Scholars.

4. Historical, Descriptive and Experimental Research

- The main focus of educational research should be on National Education Policy 2020. The areas for educational research may be accepted as National Curriculum Framework, New Curricula, Pedagogical Experiments, and enhancement of Sanskrit Teaching-Learning Practices, which are directly interconnected with National Education Policy 2020.
- The educational research must deal with new paradigm shifting towards medium of mother language and its impact on teaching-learning practices that also result in new possibilities and innovations in Sanskrit Education.
- The historical educational research should deal with ancient Indian history and educational systems of India. The qualitative research methodology should be adopted to study these educational phenomena.
- The descriptive survey-based research focussed the trends, challenges, problems, and issues of Sanskrit and Sanskrit Education to understand the cross-cutting socio-cultural aspects.
- The experimental educational research should deal with teaching methodologies, especially the Indic methods to teach humanities and science subjects. Similarly, some studies to develop Bharatiya research methodologies should be encouraged, recommended, and endorsed.

अनुसन्धानाय प्राथमिकता: प्रमुखक्षेत्राणि च

- केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः सम्बद्धानां विभिन्नसंस्थागतसमितीनाम् अन्यसम्बद्धपरिषदाज्ञ एवमर्शेन अनुसन्धानस्य प्राथमिकतानां प्रमुखक्षेत्राणाज्ञ अभिज्ञानं करिष्यते । एषु क्षेत्रेषु अनुसन्धानमारब्धुं समुपलब्धसौविध्यस्य वित्तस्य छात्रवृत्तेः प्रोत्साहनस्य अध्येतृवृत्तेः मूलभूतस्वरूपस्य च समुपलब्धताविवरणेन सह अनुसन्धानस्य प्राथमिकतायाः प्रमुखक्षेत्राणाज्ञ व्यवस्थितरूपेण सञ्चालनस्य आवश्यकता वर्तते ।
- केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः अनुसन्धानपरियोजनानां प्रकाशनानां बौद्धिकसम्पदधिकारस्य पाण्डुलिपिभाण्डारस्य च सन्दर्भे प्राधान्येन अनुसन्धानं विधातुं प्रयतिष्ठते ।
- अनुसन्धानं विधातुम् अधोलिखितप्राथमिकताः प्रमुखक्षेत्राणि च वर्तन्ते, अपि च काले –काले इमे विषयाः समीक्षणीयाः भविष्यन्ति –

1. पाण्डुलिपीनां सम्पादनं समालोचनात्मकसंस्करणानाज्ञ सज्जीकरणम् ।

- सम्पादनसिद्धान्तानां नियमानाज्ञानुसारं समालोचनात्मकं सम्पादनम् ।
- प्रकाशितानाम् अप्रकाशितानाज्ञ पाण्डुलिपीनां समालोचनात्मकं समीक्षणम् ।
- समुपलब्धैकप्रतिलिपिपाण्डुलिपे: आलोचनात्मकसंस्करणस्य सज्जीकरणम् ।
- संस्कृते हिन्द्याम् आड्गले इतरभाषासु चानुवादेन सह विशेषसंस्करणम् ।
- बौद्धिकसम्पदधिकारत्वेन एकस्वाधिकारत्वेन (पेटेंट) च प्राप्तानां पाण्डुलिपीनाम् अंशानं सङ्कलनं क्रयणम् अड्कीकरणं स्वीकरणज्येति सर्वाणि कार्याणि प्रयागराजस्थगड्गानाथझापरिसरे सम्पादयिष्यन्ते ।

2. भारतीयज्ञानपरम्परा: तासामनुप्रयोगश्च

- भारतीयज्ञानपरम्परासु सर्वाधिकसमृद्धपरम्पराणां सन्दर्भे समसामयिकसमस्यासु प्रवादेषु विषयेषु च अनुसन्धानम् ।
- भारतीयज्ञानपरम्परासम्बद्धानि कानिचन मौलिकानि वैज्ञानिकानि च शोधकार्याणि नूतनसिद्धान्तानां निरूपणात्मकानि विभिन्नक्षेत्रेषु संलग्नानां अपेक्ष्यन्ते ।
- भारतीयज्ञानपरम्पराया एभिर्विषयैः क्षेत्रैश्च सह सहसम्बन्धात्मकाध्ययने केन्द्रितमनुसन्धानम् ।
- प्राच्येतिहास-पुरातत्त्व-सङ्ग्रहालयविज्ञान-वैदिककृषि-चिकित्सापरम्परा-स्वास्थ्यसंरक्षणादिभिश्च सम्बद्धमनुसन्धानं केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य सर्वोच्चप्राथमिकता वर्तते ।
- अन्यशास्त्रसम्बद्धे कस्मिंश्चिदपि विषये संस्कृतज्ञानपरम्परासम्बद्धशाखासु च अन्तःशास्त्रीयं बहुशास्त्रीयज्ञानुसन्धानम् ।
- संस्कृतभाषायाः आलोचनात्मकं व्याख्यानविश्लेषणम् – अन्तःशास्त्रीयानुसन्धानगत्याधारितम् अन्यभारतीयभाषाभिः वैदेशिकभाषाभिश्च सह संस्कृतभाषायाः विश्लेषणम् ।

- सूचनासम्प्रेषणप्रविध्याधारितविषयाः क्षेत्राणि च – सङ्गणकीयभाषाविज्ञानम् , पारम्परिकाध्ययनम्, प्राकृतिकभाषाप्रक्रिया प्रविधिप्रयोगाधारितानुसन्धानज्ञेति । संस्कृतशिक्षणार्थं प्राविधिकसंसाधनानां विकासः, संस्कृतज्ञानपरम्परायाः अधिगमार्थं तदिष्टमोपयोगार्थज्ञं उपकरणानां तन्त्रांशानाऽच विकासः ।

3. भारतीयज्ञानपरम्पराणां समालोचनायाः समीक्षा

- भारतीयशास्त्रीयसाहित्यस्य समीक्षा ।
- औपनिवेशिकदृष्टिकोणैः प्रदर्शितस्य सिद्धान्तनिर्माणस्य प्रचारस्य च मूल्याङ्कनम् ।
- आधुनिकटीकाकारैः विद्वद्विद्वश्च पूर्वप्रकाशनानां प्रचाराणाऽच समालोचना ।

4. ऐतिहासिकं वर्णनात्मकं प्रायोगिकञ्चानुसन्धानम्

- शैक्षिकानुसन्धानस्य मुख्यकेन्द्रबिन्दुत्वेन राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 भवेत् । शैक्षिकानुसन्धानस्य क्षेत्राणि राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः रूपरेखात्वेन, नूतनपाठ्यचर्यात्वेन, शिक्षणशास्त्रप्रयोगत्वेन, शिक्षणाधिगमकार्यवृद्धित्वेन च स्वीकर्तुं शक्यन्ते यानि च साक्षाद् राष्ट्रियशिक्षानीत्या (2020) सम्बद्धानि वर्तन्ते ।
- शैक्षिकानुसन्धानं मातृभाषामाध्यमं प्रति गतिशीलप्रतिमानैः सह अवश्यं सम्बद्धं स्यात् । शिक्षणाधिगमप्रथासु अस्य प्रभावः संस्कृतशिक्षायां नूतनसम्भावनाः नवाचारांश्च जनयति ।
- ऐतिहासिकशैक्षिकानुसन्धानं प्राचीनभारतीयेतिहासेन भारतस्य शैक्षिकप्रणालैः च सम्बद्धं भवेत् । आसां शैक्षिकघटनानामध्ययनार्थं गुणात्मकशोधपद्धतिः स्वीकर्तव्या ।
- वर्णनात्मकसर्वेक्षणाधारितशोधद्वारा सामाजिकसांस्कृतिकपक्षान् अवगन्तुं संस्कृतस्य संस्कृतशिक्षायाश्च प्रवृत्तौ प्रवादेषु समस्यासु विषयेषु च अवधानं दत्तम् ।
- प्रायोगिकशैक्षिकानुसन्धानं मानविकीविषयस्य विज्ञानविषयस्य च शिक्षणपद्धतिभिः विशेषतःभारतीयविधिभिः शिक्षणेन सम्बद्धं भवेत् । एवमेव भारतीयशोधपद्धतीनां विकासाय कानिचिदध्ययनानि प्रोत्साहनीयानि अनुशंसनीयानि समर्थनीयानि च ।

नूतन अनुसन्धान नीति के अनुसार अनुसन्धान के लिए प्राथमिकताएं और प्रमुख क्षेत्र

- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय सम्बन्धित विभिन्न संस्थागत समितियों और अन्य सम्बन्धित परिषदों के परामर्श से अनुसन्धान की प्राथमिकताओं और महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करेगा। इन क्षेत्रों में अनुसन्धान आरम्भ करने के लिए उपलब्ध सुविधाओं, वित्त पोषण/छात्रवृत्ति/प्रोत्साहन/अध्येतावृत्ति और बुनियादी ढांचे की उपलब्धता के विवरण के साथ अनुसन्धान की प्राथमिकताओं और प्रमुख क्षेत्रों में व्यवस्थित रूप से अनुसन्धान सञ्चालित करने की आवश्यकता है।
- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय अनुसन्धान परियोजनाओं, प्रकाशनों, बौद्धिक सम्पदा अधिकार (आई.पी.आर), और पाण्डुलिपियों के भण्डार के सम्बन्ध में अनुसन्धान को प्राथमिकता देगा।
निम्नलिखित प्राथमिकताएं और प्रमुख क्षेत्र समय-समय पर समीक्षणीय हैं -

1. पाण्डुलिपियों का सम्पादन और महत्वपूर्ण संस्करणों की तैयारी

- i. सम्पादन सिद्धान्तों और नियमों के अनुरूप महत्वपूर्ण सम्पादन।
- ii. प्रकाशित और अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की आलोचनात्मक समीक्षा।
- iii. एकल उपलब्ध पाण्डुलिपि का आलोचनात्मक संस्करण तैयार करना।
- iv. संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुवाद के साथ विशेष संस्करण।
- v. बौद्धिक सम्पदा अधिकार (आई.पी.आर) और पेटेंट के रूप में प्राप्त पाण्डुलिपियों को साझा करना, एकत्र करना, खरीदना, डिजिटाइज करना और स्वीकार करना - ये सभी कार्य गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज में किए जाएंगे।

2. भारतीय ज्ञान परम्पराएं और उनका अनुप्रयोग

- i. भारतीय ज्ञान परम्परा की सबसे समृद्ध परम्परा के सन्दर्भ में समकालीन समस्याओं, चुनौतियों और मुद्दों पर शोध।

- ii. भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित कुछ शोधों की अपेक्षा की जाती है। भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में किये जा रहे वैज्ञानिक और मौलिक अनुसन्धान नए सिद्धान्तों की ओर ले जाते हैं।
- iii. भारतीय ज्ञान परम्परा के इन सरोकारों और क्षेत्रों पर केन्द्रित सहसम्बद्ध अनुसन्धान करना।
- iv. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकताएं प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व, संग्रहालय विज्ञान, वैदिक कृषि, दवाओं की परम्परा, स्वास्थ्य देखभाल आदि से सम्बन्धित अनुसन्धान है।
- v. अन्यशास्त्रीय अनुशासन से सम्बन्धित कोई भी विषय - संस्कृत ज्ञान प्रणाली की सम्बद्ध शाखाओं पर अन्तःविषयक और बहु-विषयक अनुसन्धान।
- vi. संस्कृत भाषा का आलोचनात्मक विश्लेषण - अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं के साथ संस्कृत भाषा का विश्लेषण जो वर्धमान अन्तःविषयक अनुसन्धान आन्दोलन पर आधारित है।
- vii. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित विषय और क्षेत्र - कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान और पारम्परिक अध्ययन, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, तकनीकी प्रयोग आधारित अनुसन्धान, संस्कृत ज्ञान प्रणाली के सीखने और अभीष्टरीति से उपयोग के लिए तकनीकी संसाधनों का विकास, उपकरणों और सॉफ्टवेयर का विकास।

3. भारतीय ज्ञान परम्पराओं की आलोचनाओं की पुनः समीक्षा

- i. भारतीय शास्त्रीय साहित्य की समीक्षा।
- ii. औपनिवेशिक दृष्टिकोणों द्वारा निर्मित सिद्धान्तों एवं प्रचारित विचारों का मूल्यांकन।
- iii. आधुनिक टीकाकारों और विद्वानों द्वारा पूर्व प्रकाशनों और प्रवर्तितमतों की आलोचना।

4. ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और प्रायोगिक अनुसन्धान

- i. शैक्षिक अनुसन्धान का मुख्य अवधान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर होना चाहिए। शैक्षिक अनुसन्धान के क्षेत्रों को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, नूतन पाठ्यचर्या, शैक्षणिक प्रयोग और संस्कृत शिक्षण-अधिगम प्रथाओं को बढ़ाने के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, जो सीधे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जुड़े हुए हैं।
- ii. मातृभाषा को शिक्षणमाध्यम के रूप में निश्चित करने से इस परिवर्तमान नवीन प्रतिमान और शिक्षण-अधिगम प्रथाओं पर इसके प्रभाव से शैक्षिक अनुसन्धान को निपटना चाहिए, जिसके परिणामस्वरूप संस्कृत शिक्षा में नई संभावनाएं और नवाचार भी होगा।
- iii. ऐतिहासिक शैक्षिक अनुसन्धान को भारत के प्राचीन इतिहास और शैक्षिक प्रणालियों से सम्बन्धित होना चाहिए। इन शैक्षिक घटनाओं का अध्ययन करने के लिए गुणात्मक शोध पद्धति को अपनाया जाना चाहिए।
- iv. सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को समझने के लिए संस्कृत और संस्कृत शिक्षा के रुद्धानों, चुनौतियों, समस्याओं और मुद्दों को समझने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण-आधारित शोध हो।
- v. प्रायोगिक शैक्षिक अनुसन्धान को मानविकी और विज्ञान विषयों को पढ़ाने के लिए शिक्षण पद्धतियों, विशेष रूप से भारतीय अनुसन्धान पद्धतियों को व्यवहार में लाना चाहिए। इसी तरह, भारतीय शोध पद्धतियों को विकसित करने के लिए कुछ अध्ययनों को प्रोत्साहित, अनुशंसित और समर्थन किया जाना चाहिए।